आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853114
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13 विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com (दूरभाष : 01262-216222) सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 10 अंक : 3 रोहतक, 14 जून, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

कैसे हों हमारे यजमान और ऋत्विज्?

❑ देवराज आर्य, सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक,
आर्य टैण्ड हाउस, रोहतक मार्ग, जीन्द

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञँ हिँसिष्टं मा यज्ञपतिं जादवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। यजु० 5/3

पदार्थ—(ओं) हे सर्वरक्षक परमेश्वर आपकी कृपा से (नः) हम सभी के हित के लिये यजमान और ऋत्विज् याज्ञिक गृहस्थ स्त्री और पुरुष (समनसौ) समान मन वाले, (सचेतसौ) समान विचारों वाले, (अरेपसौ) पाप-अपराध-कुटिलता-छल-कपट आदि भावनाओं से रहित (भवतम्) होवें। वे (यज्ञम्) यज्ञ एवं शुभ कार्य को और (यज्ञपतिम्) यज्ञानुष्ठान करने वाले एवं शुभ कर्म करने वाले को (मा हिसिष्टम्) हानि न पहुँचायें, उनमें किसी प्रकार की कमी न आने दें। इस प्रकार के आचरण वाले होकर वे (जातवेदसौ) प्रबुद्ध ज्ञानी बनें। (नः) हमारे लिये (अद्य) सदैव (शिवौ भवतम्) सुख-कल्याणकारी सिद्ध होवें, (स्वाहा) इस कामना से मैं यह आहुति प्रदान करता हूँ।

भावार्थ—आदरणीय आर्यबन्धुओ, पूज्या मातृशक्ति, उपरोक्त वेदमन्त्र हमें बता रहा है कि यज्ञ अर्थात् कोई भी शुभ कार्य उस समय सफल होता है जब यजमान और ऋत्विज् पवित्र मन, विशाल हृदय तथा उज्वल भावना को लेकर उस कार्य के प्रति समर्पित होकर जब 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण कर कहते हैं कि हम मन, वचन, कर्म एवं आत्मभाव से सत्यनिष्ठा पूर्वक त्याग एवं समर्पण की भावना लेकर समान मन एवं समान विचारों को लेकर इसे पूर्ण करेंगे। इसी प्रकार गृहस्थ स्त्री-पुरुष को भी गृहाश्रम को ठीक प्रकार चलाने एवं सुखी जीवन जीने के लिये सन्तान को योग्य एवं सभ्य, सुशील नागरिक बनाने के लिए पवित्र मन और विचार वाला बनना आवश्यक है।

अब प्रश्न है कि हम इन गुणों को कैसे धारण करें। इसके लिए उस उपासनीय, वरणीय एवं कुत्सित वासनाओं को छिन्न-भिन्न करने वाले इष्टदेव की शरण में जाना होगा। वेद में भी कहा है कि—

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः। वसु स्पार्हं तदा भर॥ साम०

पदार्थ—(विश्वा-द्विषः) हे इन्द्र ऐश्वर्यवान् परमात्मन्! तू समस्त द्वेष करने वाली प्रवृत्तियों को (अप भिन्धि) छिन्न-भिन्न कर दे (बाधः) समस्त बाधा भावनाओं को (मृधः) पापवृत्तियों को (परिजही) सब प्रकार से दूर कर दे।

हे परमात्मा, मेरे अन्दर से दूसरों के प्रति होने वाली द्वेष प्रवृत्तियों को छिन्न-भिन्न कर दे। समस्त बाधाओं एवं पापवृत्तियों को मिटाकर (स्पार्हं वसु तत् आभर) सभी के प्रति होने वाली हितचिंतन की भावना को भर दे।

जब हमारे अन्दर से छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, पाप-अपराध एवं कुटिलता आदि की भावनाएं मिटती जायेंगी तभी हम समान मन एवं समान विचारों वाले बनकर घर, समाज और राष्ट्र के लिये हितकारी सिद्ध हो सकेंगे। हमारे द्वारा किये जाने वाले यज्ञानुष्ठान आदि शुभ कार्य तभी फलदायक होंगे जब हम ज्ञान, तप और त्याग भाव से 'इदन्न मम' कहकर सार्थक रूप में अपने आपको समाजहित के लिए समर्पित कर देंगे।

हम सभी का हित तभी फलीभूत होगा जब हम निम्न वेदमन्त्र को जीवनाधार बनाकर इसकी उपासना करेंगे। मन्त्र में कहा है कि—

**ओं संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥**
(ऋ० 10/191)

हे ईश्वर! आपकी कृपा से हमारी चाल एक जैसी हो अर्थात् हम सब मिलकर वेदमार्ग पर चलने वाले हों। हमारी वाणी सत्य, धर्म, न्याय और ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश करती रहे। हम सब के मन एक-दूसरे के अविरोधी होकर धर्माचरण, शिष्टाचार तथा समाजहित कार्यों में लगने वाले हों। जैसे हमारे पूर्वज महाशय सम्यग् ज्ञानवान् विद्वान् मिलकर अपने-अपने उत्तरदायित्व को निभाते रहे हैं उसी प्रकार हम भी धर्म मार्ग पर अग्रसर होते रहें तभी हम सबका हित साधन पूर्ण होगा।

यह संगठन सूत्र का मन्त्र भी इसी बात को प्रदर्शित कर रहा है कि हम मन वाणी और कर्म से मिलकर चलने वाले हों। इसके साथ ही हम यज्ञ जैसे शुभ कर्म एवं यज्ञानुष्ठान करने वाले लोगों के मार्ग का विस्तार करते रहें। उनके इस शुभ कर्म में किसी प्रकार की रुकावट न आने दें। इस प्रकार यजमान और ऋत्विज् (जातवेदसौ) प्रबुद्ध ज्ञानी एवं सदाचारी बनकर हम सबके मार्गदर्शक, सुख-शान्ति प्रदाता बनकर कल्याणकारी सिद्ध होवें। यज्ञ आदि शुभ कर्मों में सिद्धि कब प्राप्त होती है? इसके लिए मनु महाराज कहते हैं कि—

**इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमृच्छः य संशयम्।
संनियम्य तु तान्येव ततः सिद्धिं नियच्छति॥**
(मनु० 2/68)

शब्दार्थ—(इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन) जीवात्मा इन्द्रियों के साथ मन लगाने से (असंशयम्) निःसन्देह (दोषम्+ऋच्छति) दोषी हो जाता है (तु तानि सन्नियम्य एव) और उन इन्द्रियों और मन को वश में करके ही (ततः) पश्चात् (सिद्धि नियच्छति) सिद्धि को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में इसी का भावार्थ लिखते हुए कहते हैं कि **"जो इन्द्रियों के वश में होकर विषयी, धर्म को छोड़कर अधर्म करनेहारे अविद्वान् हैं, वे मनुष्यों में नीच जन्म बुरे-बुरे दुःखरूप जन्म को पाते हैं।"**

इसलिये दस इन्द्रियों तथा ग्यारहवें मन को वश में करके युक्ताहार-विहार द्वारा योग मार्ग पर चलकर शरीर की रक्षा करता हुआ सब अर्थों को सिद्ध करे।

सब मनुष्यों को चाहिए कि परमेश्वर की उपासना और विद्वानों का सङ्ग करके विद्या की वृद्धि करें, क्योंकि इनके द्वारा दिव्य गुणों को प्राप्त होकर सुखों को प्राप्त होता है। इस प्रकार वे आप सब सुखों को प्राप्त होकर और सबके लिये प्राप्त करायें। परन्तु विषयी व्यक्ति को सिद्धि नहीं मिलती इस विषय मे मनु महाराज कहते हैं—

**वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च।
न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित्॥**
(मनु० 2/72)

शब्दार्थ—(विप्रदुष्टभावस्य) जो अजितेन्द्रिय दुष्टाचारी पुरुष हैं, उस पुरुष के (वेदाः त्यागः यज्ञाः नियमाः तपांसि) वेद पढ़ना, त्याग करना, यज्ञ-अग्निहोत्रादि करना, नियम-ब्रह्मचर्यादि नियमों को धारण करना, तप अर्थात् निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ आदि द्वन्द्वों को सहना आदि कर्म (कर्हिचित्) कदापि (सिद्धिं न गच्छन्ति) सिद्ध नहीं हो सकते।

इसी का भावार्थ समझाते हुए महर्षि दयानन्द

शेष पृष्ठ सात पर....

वेद में ब्रह्मचर्याश्रम

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

ब्रह्मचर्याश्रम जो कि सब आश्रमों का मूल है, उसके ठीक-ठीक सुधरने से सब आश्रम सुगम और बिगड़ने से नष्ट हो जाते हैं। इस आश्रम के विषय में वेदों में अनेक प्रमाण हैं, उनमें से कुछ यहाँ भी लिखते हैं—

आचार्यऽउपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः॥
इयं समित्पृथिवी द्यौर्द्वितीयोतान्तरिक्षं समिधा पृणाति।
ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण लोकांस्तपसा पिपर्ति॥
पूर्वो जातो ब्रह्मणो ब्रह्मचारी घर्मं वसानस्तपसोदतिष्ठत्।
तस्माज्जातं ब्राह्मणं ब्रह्म ज्येष्ठं देवाश्च सर्वे अमृतेन साकम्॥

(अथर्ववेद कां० 11। अनु० 3। व० 5। मन्त्र 3-5)

अर्थ—(आचार्य उपनयमानो०) अर्थात् जो गर्भ में बस के माता और पिता के सम्बन्ध से मनुष्य का जन्म होता है, वह प्रथम जन्म कहाता है। और दूसरा यह है कि जिसमें आचार्य पिता और विद्या माता होती है। इस दूसरे जन्म के न होने से मनुष्य को मनुष्यपन नहीं होता। इसलिये उसको प्राप्त होना मनुष्यों को अवश्य चाहिये। जब आठवें वर्ष पाठशाला में जाकर आचार्य अर्थात् विद्या पढ़ाने वाले के समीप रहते हैं, तभी से उनका नाम ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी हो जाता है, क्योंकि वे ब्रह्म वेद और परमेश्वर के विचार में तत्पर रहते हैं। उनको आचार्य तीन रात्रिपर्यन्त गर्भ में रखता है। अर्थात् ईश्वर की उपासना, धर्म, परस्पर विद्या के पढ़ने और विचारने की युक्ति आदि जो मुख्य-मुख्य बातें हैं, वे सब तीन दिन में उनको सिखाई जाती हैं। तीन दिन के उपरान्त उनको देखने के लिये अध्यापक अर्थात् विद्वान् लोग आते हैं।

(इयं समित०) फिर उस दिन होम करके उनको प्रतिज्ञा कराते हैं कि जो ब्रह्मचारी पृथिवी, सूर्य और अन्तरिक्ष इन तीनों प्रकार की विद्याओं को पालन और पूर्ण करने की इच्छा करता है, सो इन समिधाओं से पुरुषार्थ करके सब लोकों को धर्मानुष्ठान से पूर्ण आनन्दित कर देता है।

(पूर्वो जातो ब्रह्मणो) जो ब्रह्मचारी पूर्व पढ़ के ब्राह्मण होता है, वह धर्मानुष्ठान से अत्यन्त पुरुषार्थी होकर सब मनुष्यों का कल्याण करता है (ब्रह्म ज्येष्ठं०) फिर उस पूर्ण विद्वान् ब्राह्मण को, जो कि अमृत अर्थात् परमेश्वर की पूर्ण भक्ति और धर्मानुष्ठान से युक्त होता है, देखने के लिये सब विद्वान् आते हैं।

ब्रह्मचार्येऽति समिधा समिद्धः कार्ष्णंवसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रुः।
स सद्य एति पूर्वस्मादुत्तरं समुद्रं लोकान्त्संगृभ्य मुहुराचरिक्रत्॥
ब्रह्मचारी जनयन् ब्रह्मापो लोकं प्रजापतिं परमेष्ठिनं विराजम्।
गर्भो भूत्वामृतस्य योनाविन्द्रो ह भूत्वाऽसुरांस्ततर्ह॥

(अथर्ववेद कां० 11। अनु० 3। व० 5। मन्त्र 6-7)

अर्थ—(ब्रह्मचार्येति०) जो ब्रह्मचारी होता है, वही ज्ञान से प्रकाशित तप और बड़े-बड़े श्मश्रुओं से युक्त दीक्षा को प्राप्त होके विद्या को प्राप्त होता है। तथा जो कि शीघ्र ही विद्या को ग्रहण करके पूर्व समुद्र जो ब्रह्मचर्याश्रम का अनुष्ठान है, उसके पार उतर के उत्तर समुद्रस्वरूप गृहाश्रम को प्राप्त होता है और अच्छी प्रकार विद्या का संग्रह करके विचारपूर्वक अपने उपदेश का सौभाग्य बढ़ाता है।

(ब्रह्मचारी जनयन्०) वह ब्रह्मचारी वेदविद्या को यथार्थ जानके प्राणविद्या, लोकविद्या तथा प्रजापति परमेश्वर जो कि सबसे बड़ा और सबका प्रकाशक है, उसका जानना, इन विद्याओं में गर्भरूप और इन्द्र अर्थात् ऐश्वर्ययुक्त होके असुर अर्थात् मूर्खों की अविद्या का छेदन कर देता है।

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते॥
ब्रह्मचर्येण कन्या३ युवानं विन्दन्ते पतिम्।
अनडवान् ब्रह्मचर्येणाश्वो घासं जिगीषति॥
ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्व राभरत्॥

(अथर्ववेद कां० 11। अनु० 3। व० 5। मन्त्र 17-19)

अर्थ—(ब्रह्मचर्येण तपसा) पूर्व ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़के और सत्यधर्म के अनुष्ठान से राजा राज्य करने को और आचार्य विद्या पढ़ाने को समर्थ होता है। आचार्य उसको कहते हैं कि जो असत्याचार को छुड़ाके सत्याचार का और अनर्थों को छुड़ाके अर्थों का ग्रहण कराके ज्ञान को बढ़ा देता है।

(ब्रह्मचर्येण कन्या०) अर्थात् जब वह कन्या ब्रह्मचर्याश्रम से पूर्ण विद्या पढ़ चुके तब अपनी युवावस्था में पूर्ण जवान पुरुष को अपना पति करे। इसी प्रकार पुरुष भी सुशील धर्मात्मा स्त्री के साथ प्रसन्नता से विवाह करके दोनों परस्पर सुख-दुःख में सहायकारी हों। क्योंकि अनड्वान् अर्थात् पशु भी जो पूरी जवानी पर्यन्त ब्रह्मचर्य अर्थात् सुनियम में रखा जाय, तो अत्यन्त बलवान होके निर्बल जीवों को जीत लेता है।

(ब्रह्मचर्येण तपसा०) ब्रह्मचर्य और अनुष्ठान से ही विद्वान् लोग जन्म-मरण को जीत के मोक्षसुख को प्राप्त हो जाते हैं। जैसे इन्द्र अर्थात् सूर्य परमेश्वर के नियम में स्थित होके सब लोकों का प्रकाश करने वाला हुआ है, वैसे ही मनुष्य का आत्मा ब्रह्मचर्य से प्रकाशित होके सबको प्रकाशित कर देता है। इससे ब्रह्मचर्याश्रम ही सब आश्रमों से उत्तम है।

(महर्षि दयानन्दः, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)

आर्यसमाज श्रेष्ठ विचारों का मंच

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

नहीं ढोंग और पाखण्ड यहाँ और नहीं कोई प्रपंच।
महर्षि का आर्यसमाज है, श्रेष्ठ विचारों का मंच॥ टेक॥
10 अप्रैल 1875 को ऋषि दयानन्द आये बम्बई गिरधाम।
माणिक जी बागबाड़ी में एकत्र हुए ऋषि भक्त तमाम।
करबद्ध होकर बड़ी श्रद्धा से, सबने किया ऋषि को प्रणाम।
ऋषि ने आर्यसमाज बनाया, हुई सहमति सबकी आम।
सहर्ष बने सभी सदस्य आर्य, वहाँ उपस्थित सज्जन और श्रीमन्त।
महर्षि का आर्यसमाज है, श्रेष्ठ विचारों का मंच॥ 1॥
उसी सभा में महर्षि ने, नियम और उपनियम बनाये।
सब सत्यविद्या के आदिमूल, एक परमेश्वर ही बताये।
नियम दूसरे में ईश्वर के, कई सार्थक नाम गिनाये।
नियम तीसरे में सब सत्यविद्या के पुस्तक वेद बताये।
वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने में, हम नहीं करें प्रपंच।
महर्षि का आर्यसमाज है, श्रेष्ठ विचारों का मंच॥ 2॥
चौथे नियम में असत्य त्याग, सदा सत्य ग्रहण करना चाहिए।
नियम पाँचवें में सभी कार्य, हमें धर्मानुसार वर्तना चाहिए।
छठे में जग उपकार सदा, इस समाज को करना चाहिए।
शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक, सब उन्नति करना चाहिए।
परोपकार के कार्य का, कभी होता नहीं कोई अंत।
महर्षि का आर्यसमाज है, श्रेष्ठ विचारों का मंच॥ 3॥
नियम सात में सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार बरतना चाहिए।
आठवें में अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना चाहिए।
अपनी उन्नति में ही सन्तुष्ट, आर्यो को नहीं रहना चाहिए।
सबकी उन्नति में ही सदा, अपनी उन्नति समझना चाहिए।
निज स्वार्थ त्याग परहित करे, होता है वही संत।
महर्षि का आर्यसमाज है, श्रेष्ठ विचारों का मंच॥ 4॥
सामाजिक सर्वहितकारी नियम में, सबको परतंत्र रहना चाहिए।
वेदानुकूल हितकारी नियम में, सबको स्वतन्त्र रहना चाहिए।
व्यसनों का करें त्याग सभी, हमें सदाचारी रहना चाहिए।
प्रातः-सायं सन्ध्या-हवन में, हमें नियमित रहना चाहिए।
त्याग-तपस्या श्रेष्ठ आचरण, बना देता हमें संत।
महर्षि का आर्यसमाज है, श्रेष्ठ विचारों का मंच॥ 5॥
अत्याचार, अन्याय, अभाव विरुद्ध कोई संघर्ष कर सकता है।
'सत्यार्थप्रकाश' को पढ़कर निज जीवन परिवर्तन कर सकता है।
नहीं छुआछूत नहीं जात-पात, कोई भी वेद पढ़ सकता है।
नहीं पंथ और मजहब यहाँ, कोई भी आर्य बन सकता है!
नहीं भूत-प्रेत जादू-टोना यहाँ, नहीं छल और प्रपंच।
महर्षि का आर्यसमाज है, श्रेष्ठ विचारों का मंच॥ 6॥

ओ३म्

ईश्वर को प्राप्त करके ही मुक्ति मिल सकती है

-: वेद-मन्त्र :-

वेदाऽहं तं पुरुषं महान्तमादित्यः वर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वा अतिमृत्युमेति नान्यपंथा विद्यते अनायम्॥

व्याख्या—वेदाऽहं तं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णम्—वेदमन्त्र में ऋषि कहते हैं। मैं उस महानतम पुरुष परमपिता परमेश्वर को जानता हूं। जिसने इस सृष्टि की रचना की है, पालन कर रहा है एवं धारण कर रहा है। वह सूर्य के समान वर्ण वाला, अर्थात् उसी के तेज से ही ये असंख्य ग्रह (सूर्यादि) प्रकाश प्राप्त करके समस्त सृष्टि को प्रकाशित कर प्राणिमात्र के हित में आकाश में विचरण कर रहे हैं।

तमसः परस्तात्—वह महान् पुरुष अज्ञानरूपी अन्धकार से परे है। अर्थात् अज्ञानी व्यक्ति उसे प्राप्त नहीं कर सकते तथा वही परमपिता परमेश्वर समस्त ज्ञान विज्ञान का भण्डार है।

'तत्र निरतिशय सर्वस्य बीजम्' उस परमपिता परमेश्वर ने ही समस्त ज्ञान-विज्ञान को बीज रूप से वेदों के रूप में ऋषियों के माध्यम से सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य को दिया।

तमेव विदित्वा अतिमृत्युमति—उसी परमपिता को जानकर मनुष्य मृत्यु आदि सांसारिक दुःखों से दूर होकर मुक्ति एवं स्वर्ग (सुख विशेष) को प्राप्त कर सकता है।

'ईश्वरप्रणिधानाद् वा' ईश्वर के प्रति प्रत्येक दुःख, सुख में अपने आपको उसके प्रति समर्पित करना अर्थात् जिस प्रकार एक छोटा (नवजात) शिशु मां की गोद में बैठकर सभी प्रकार के दुःख, सुखों को भूलकर मां की गोद का आनन्द लेता है। उसी प्रकार जो व्यक्ति प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में उठकर सिद्ध आसन अथवा पद्मासन लगाकर उस पिता की गोद में बैठकर **'तद्जस्तद्-भावना'** उसके प्रति समर्पित होकर श्रद्धा भावना से उस ओ३म् का जप करता है वही व्यक्ति—

'सत्येन लभ्य, तपसा हि अयमात्मा सम्यक् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येन नित्यम्'

'अन्तशरीरे ज्योतिमयो हि शुभ्रं यं पश्यन्ति यतमो क्षीण दोषाः'

सत्य के द्वारा, तप के द्वारा, सम्यक् ज्ञान के द्वारा, ब्रह्मचर्य के द्वारा उस परमपिता परमेश्वर जिसका रूप अथवा वर्ण उपरोक्त है। अपने अन्दर अपनी आत्मा में ही प्रकाशमान देख सकता है, प्राप्त कर सकता है। उसका ज्ञान अनुभव करके मृत्यु आदि दुःखों से दूर हो सकता है।

नान्यपन्था विद्यते अनायम्—और इन मृत्यु आदि दुःखों से दूर होने का दूसरा कोई उपाय नहीं है। क्योंकि भर्तृहरि ने कहा भी है—

भोगे रोगभयं, चित्ते नृपालाद् भयम्-सर्वं वस्तु भयमिति नृणाम्।
शम्भो पदं निर्भयम्।

सांसारिक भोग-विलास से रोग एवं मृत्यु आदि का भय है। संसार का ऐसा कोई भी पंचभूतों से निर्मित पदार्थ नहीं है जिसमें दुःखों का भय नहीं हो। अतः योगिराज भर्तृहरि जी तथा उपरोक्त वेदमन्त्र यह कहता है कि उस परमपद शिव (कल्याणकारी) ईश्वर को प्राप्त करके ही मनुष्य सभी दुःखों तथा सभी भयों से निर्भय हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग मृत्यु आदि दुःखों से छूटकर मुक्ति प्राप्त करने का नहीं है।

अन्य इन झूठे, लम्पट, स्वेच्छाचारी, ढोंगी, पाखण्डी गुरुओं के चंगुल से दूर रहकर उस निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् ईश्वर की ही भक्ति करें। उसके अतिरिक्त हम किसी की भी स्तुति, उपासना प्रार्थना आदि न करें।

—आचार्य बलदेव

इसे दीन त्राता ये बतला रहे हैं...

पुराणों की मनघड़न्त गाथा को सुनकर,
ये जड़ बुत को पूजें व पुजवा रहे हैं।
अजब सूझ इनकी निराली है बुद्धि,
कि जड़ वस्तु से भी यह भय खा रहे हैं।
इधर भीख तक इन से मँगवा रहे हैं,
उधर सबका पालक भी बतला रहे हैं।
यह क्या कर रहे हैं, किधर जा रहे हैं,
क्यों अज्ञानी बन, ठोकरें खा रहे हैं॥

(पौराणिक हिन्दू-2)

मरे पितरों को खीर पहुँचा रहे हैं,
मगर जिन्दा पितरों को तरसा रहे हैं।
मानव होकर मानस से घृणा हैं करते,
छुआछूत करके मिटे जा रहे हैं।
ना मन्दिर में प्रवेश हों ईश प्राणी,
भ्रष्ट इनके ईश्वर हुए जा रहे हैं।
चेतन होके जड़ से करें याचना यह,
कि मानवता को भी यह लजा रहे हैं।
अहिंसा को माने परम धर्म अपना,
मगर देवी पर बकरे कटवा रहे हैं।
प्रभु की ही रचना हैं सब मूक प्राणी,
मगर मांस इनका भी यह खा रहे हैं।
जन्म से वर्ण, जाति, उपजाति मानें,
जो सत्कर्म हैं, उनको झुठला रहे हैं।
सनातन धर्म नाम का देके धोखा,
ब्राह्मण देवता इनको बहका रहे हैं।
असल मत सनातन तो वैदिक धर्म है,
मगर वेद विपरीत यह जा रहे हैं।
हर एक ख्याल उल्टा हर एक चाल मिथ्या,
अविद्या व अन्धकार में आ रहे हैं।
हैं कितने यह मूर्ख कि सत बात को भी,
जो समझाये तो क्रोध में आ रहे हैं।
हैं जो हीनबुद्धि या स्वार्थ के वश में,
ना मानेंगे **'सेवक'** क्यों समझा रहे हैं।
यह क्या कर रहे हैं, किधर जा रहे हैं॥

भेंटकर्त्ता : **सूबेदार करतारसिंह आर्य-सेवक,**
आर्यसमाज गोहाना मण्डी, जिला सोनीपत

प्रस्ताव

करौंथा और निकटवर्ती गाँव के निवासियों को करौंथा आश्रम में हो रहे पापाचार, अनाचार और दुराचार से दुःखी होकर सन्त रामपाल के अनुयायियों को सतलोक आश्रम से खदेड़ने और आश्रम खाली कराने की मांग को लेकर भड़की हिंसा में तीन की मृत्यु हो गई, चार गम्भीर रूप से व सैकड़ों घायल हो गए। इस प्रस्ताव द्वारा इस घटनाक्रम की घोर निन्दा करती है और हरियाणा सरकार से मांग करती है कि इस घटना में बलिदान हुए वीरों के आश्रितों को अनुदान देने और परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाए। दिवंगत वीरों की आत्मिक शान्ति के लिए प्रार्थना की और उनके परिवारों को दुःख सहन करने के लिए भी प्रार्थना की गई।

—केशवदास आर्य, मंत्री, आर्यसमाज जगाधरी वर्कशाप-135002

ईश्वर-प्रार्थना

टेक— आओ... ईश्वर के गुण गाओ।
उत्तम कर्म करो इस जग में, तुम मानव बन जाओ।
आओ... ईश्वर के गुण गाओ।

1. परमपिता वह परम दयालु, सब को राह दिखाए।
जो भी उसकी शरण में आये, वो उसका बन जाए।
शुभ आचरण बनाकर अपना, ईश्वर को अपनाओ।
आओ... ईश्वर के गुण गाओ।

2. शुभ-कर्मों से मिला है जीवन, इसको शुद्ध बनालो।
जो भी सद्गुण हैं इस जग में, उनको तुम अपनालो।
संध्या-हवन, ध्यान करो तुम, जीवन सफल बनाओ।
आओ... ईश्वर के गुण गाओ।

3. मधुर वचन बोलो तुम सब से, मन निर्मल हो जाये।
परमपिता का ध्यान करो तुम, हृदयकमल खिल जाये।
माता-पिता की सेवा करके, जीवन में सुख पाओ।
आओ... ईश्वर के गुण गाओ।

4. धन्य 'सरस' वे मानव जग में, जो ईश्वर-गुण गाए।
अपने मन में ईश बसाकर, उसकी शरण में आए।
जन्म-मरण के इस बन्धन से, तुम मुक्ति पा जाओ।
आओ... ईश्वर के गुण गाओ।

—सुरेन्दकुमार 'सरस', सूर्यनगर, गोहाना रोड, रोहतक मो. 9254069111

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. 36वाँ युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर — 10 से 16 जून 2013
डी.ए.वी. स्कूल, निकट श्रद्धानन्द पार्क, न्यू कालोनी पलवल
2. आर्यसमाज बालधन कलां जिला रेवाड़ी — 6 से 7 जुलाई 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

समय का सदुपयोग करना सीखें

❑ खुशहालचन्द आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

योगिराज बाबा रामदेव ने सर्वप्रथम 4 जून 2011 को रामलीला मैदान दिल्ली में बहुत बड़ा प्रदर्शन सरकार की नीतियों के विरोध में किया था, तब मैं कुछ दिनों पहले कलकत्ता से मेरे गाँव देवराला (हरयाणा) गया था और फिर 30.5.2011 को भिवानी होते हुए बस द्वारा हरिद्वार गया था। वहाँ मैं पतञ्जलि योगपीठ की वाल्मीकि धर्मशाला में ठहरा था। वहाँ मेरी इच्छा बाबा रामदेव व उनके साथियों से मिलने की थी परन्तु सभी दिल्ली गये हुए थे।

मुझे पूज्य स्वामी मुक्तानन्द जी व आदरणीय श्री चन्द्रदेव जी (पूर्व नाम चाँदसिंह) मिले। तभी मुझे पूज्य आचार्य प्रद्युम्न जी से भी मिलने का सुअवसर मिला। वे बच्चों की कक्षा लगाते थे इसलिए ता० 1.6.2011 को सायं चार बजे एक गाड़ी से उतरे, तभी उनके साथ मेरे पूर्व सुपरिचित आदरणीय रूपचन्द जी 'दीपक' लखनऊ वाले भी थे। आचार्य जी से तो मेरा तब तक कोई विशेष परिचय नहीं था, परन्तु रूपचन्द जी ने मुझे देखते ही नमस्ते की और वे दोनों एक हॉल में चले गये जहाँ आचार्य जी को बच्चों की क्लास में उपदेश देना था। मेरे साथ भी एक वाल्मीकि धर्मशाला का साथी था। हम दोनों भी बच्चों के साथ क्लास में बैठ गये। आचार्य जी के बोलने से पहले रूपचन्द जी दीपक आधा घण्टा बोले। उनके बोलने का मुख्य विषय 'समय की सदुपयोगिता' का था।

दीपक जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि मनुष्य को अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए। किस समय कैसे उसका सदुपयोग किया जावे, ये सभी सारगर्भित बातें बहुत ही सरल भाषा में समझाकर बताई जो मुझे बहुत ही पसन्द आई और मैं उनका उपयोग भी समय मिलने से करता हूँ। दीपक जी ने कहा कि मनुष्य को जब भी खाली समय मिले तो उसे वैसे ही नहीं बिताना चाहिए। उसका सदुपयोग हम इसी भाँति कर सकते हैं। यदि आप किसी स्टेशन पर टिकट लेने लाइन में खड़े हों और टिकट काफी बाद मिलने की संभावना हो तो आप खड़े-खड़े 'गायत्री मन्त्र' या 'ओ३म्' का नाम लेना आरम्भ कर देवें। यदि आपका कोई आराध्यदेव है जिसमें आपका अधिक विश्वास है तो उसका नाम लेना आरम्भ कर देवें तो देखेंगे आपको नाम लेने में आनन्द आयेगा, आपको एक विशेष प्रकार की शान्ति मिलेगी और आपका समय आसानी से कट जायेगा और आप टिकट लेकर गाड़ी में बैठ जाओगे। यदि आप ऐसे ही खड़े रहोगे तो कभी किधर देखोगे, कभी किधर देखोगे और समय कटना आपके लिए भारी हो जायेगा। इस बीच आप कभी टिकट काटने वाले पर झुंझलायेंगे, तो कभी आप अपने पास खड़े व्यक्ति से बेमतलब की बातें करेंगे जिससे आपको कोई लाभ नहीं होगा। यदि उसी समय आप 'गायत्री मन्त्र' या 'स्तुतिप्रार्थनोपासना' के आठ मन्त्रों का उच्चारण करना आरम्भ कर देवें या 'ओ३म्' का नाम लेना आरम्भ कर देवें तो आपको आनन्द की अनुभूति भी होगी और समय का भी पता नहीं लगेगा।

इसी प्रकार यदि आप भोजन करने के लिए बैठे हैं और भोजन बनने में कुछ देरी है तो आप भोजन बने तब तक बैठे-बैठे प्राणायाम करना प्रारम्भ कर देवें यानि कपालभाति या लोम-विलोम करना आरम्भ कर देवें जिससे आपकी शरीर शुद्धि होगी, भूख अच्छी लगेगी और समय आसानी से कट जायेगा। रेल की यात्रा में हों तो आप अच्छी पुस्तकें साथ रखें जैसे महर्षि दयानन्द की जीवनी, सत्यार्थप्रकाश या अन्य कोई धार्मिक पुस्तक पास रखें। जब भी खाली समय मिले अच्छी पुस्तकें पढ़ना आरम्भ कर देवें। यदि आप लेख या कविता लिखने के अभ्यासी हैं तो रेलयात्रा इस काम के लिए अति उपयोगी है। आप कागज, पैन अपने पास रखिए। ऐसे समय में आप अपने लेख व कविता के हिन्ट (बिन्दु) लिख लीजिये ताकि आपको लेख व कविता बनाने में आसानी रहे। यदि आपको रात्रि को नींद नहीं आ रही तो आप करवटें न बदलें बल्कि कोई अच्छी पुस्तक लेकर पढ़ना आरम्भ कर देवें या फिर प्रभु का नाम किसी रूप में भी लेना आरम्भ कर देवें तो आप देखेंगे कि आपको कब नींद आ गई आपको पता भी नहीं लगेगा।

इसी प्रकार आपको प्रातः टट्टी जाना है और टट्टी जाने की इच्छा नहीं बन रही है, इस हालत में आप अपने मन को सब विषयों से हटाकर मन को खाली कर लेवें, फिर 'ओ३म्' का स्मरण करना आरम्भ कर देवें, थोड़ा शरीर को हिलाकर हल्का-हल्का व्यायाम करें तो फौरन टट्टी की इच्छा बन जायेगी और टट्टी साफ लगेगा। इसी प्रकार मनुष्य के जीवन में अनेक अवसर ऐसे आते हैं जब उसको बैठना-उठना दूभर हो जाता है और वह अपने आपको थका-थका महसूस करने लगता है।

जैसे आपको बैंक में रुपये डालने या निकलवाने हैं, लाइन काफी लम्बी लगी हुई है और काम बनने में काफी देर होती दीखती है तो इस स्थिति में आप किसी ब्रेंच या कुर्सी पर बैठकर प्राणायाम करना आरम्भ कर देवें या प्रभु के नाम का मन ही मन उच्चारण करना आरम्भ कर देवें तो आपका समय व्यतीत होते देरी नहीं लगेगी और आपको थकावट महसूस नहीं होगी और आपको शारीरिक लाभ भी हो जायेगा। तत्पश्चात् मैं 4.6.2011 के महा-सम्मेलन में भी शामिल हुआ।

मुझे दीपक जी के यह विचार बहुत पसन्द आये और मैं अपने जीवन में प्रयोग भी करता हूँ। मुझे काफी लाभ व सन्तोष होता है। पाठकों से भी मेरा अनुरोध है कि वे भी इनका प्रयोग करके अपने जीवन को सुखी व आनन्दित करें।

मास्टर खजानसिंह आर्य का निधन

मा० खजानसिंह आर्य

दैनिक हरिभूमि के प्रधान सम्पादक डॉ० कुलवीर छिक्कारा के पिता मा० खजानसिंह आर्य ग्राम जूवाँ जिला सोनीपत का हृदयगति रुकने से 9 जून को निधन हो गया। उनकी उम्र 75 वर्ष थी। वे आर्यसमाज के स्तम्भ थे। उन्होंने अपनी गाँव की भूमि में गुरुकुल तथा आर्यसमाज की स्थापना करवाई थी। प्रत्येक वर्ष वैदिक विद्वानों को बुलाकर आर्यसमाज का प्रचार करवाते थे। वे जहाँ भी रहते आर्यसमाज की ही बात करते थे। प्रतिदिन हवन-यज्ञ के पश्चात् अपनी दिनचर्या शुरू करते थे। वे अपने पीछे अपनी पत्नी रामकौर, इकलौते पुत्र डॉ० कुलवीर छिक्कारा, पुत्री डॉ० सुदेश सहित पूरा भरा परिवार छोड़ गए हैं। उन्होंने दिल्ली प्रशासन में शारीरिक अध्यापक के रूप में सेवा की। उनके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

उनका दाह-संस्कार पूर्णतया वैदिक रीति से ग्राम जूवां में किया गया। दाह-संस्कार में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के संरक्षक एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान आचार्य बलदेव जी, स्वामी रामदेव जी, बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता कै० अभिमन्यु, मेजर सतपाल सिन्धु, पूर्व विधायक श्री ओमप्रकाश बेरी, राजीव जैन, विधायक बिजेन्द्रसिंह, जितेन्द्र छिक्कारा, डॉ० महासिंह पूनिया, सुभाष श्योराण, रणवीर छिल्लर के अतिरिक्त हरिभूमि परिवार के सदस्य एवं भारी संख्या में ग्रामवासी सम्मिलित हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करती है। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा परिवार को इस विकट दुःख को सहन करने की शक्ति देवे। उनकी शोक-सभा 20 जून 2013 को उनके निवास स्थान सैक्टर-3, म०नं० 1394 में होगी।

—सत्यवान आर्य, वरिष्ठ लिपिक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

शोक-प्रस्ताव

आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड जीन्द के प्रधान श्री कर्णसिंह जी आर्य के युवा पुत्र सत्यव्रत आर्य कुछ समय से बीमार चल रहे थे दिनांक 4.6.2013 को अचानक उनका देहान्त हो गया जिससे आर्यजगत् में शोक की लहर व्याप्त हो गई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इस दुःख की घड़ी में आर्य परिवार के साथ गहरी सहानुभूति प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करती है एवं परिवार को कष्ट सहने की शक्ति ईश्वर प्रदान करे ऐसी कामना करती है। —मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

शोक-समाचार

महाशय टेकचन्द जी, गाँव कुराड़ (सोनीपत) का लगभग 90 वर्ष की आयु में दिनांक 9.6.2013 को स्वर्गवास हो गया। वे आयुपर्यन्त आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय रहे। गुरुकुल कालवा से उनका विशेष लगाव था। वे गुरुकुल में आते रहते थे व अपना सहयोग देते रहते थे। उनके निधन पर आचार्य बलदेव जी ने कहा कि जैसे खरबूजा पक कर बेल से गिरता है उसी प्रकार महाशय जी ने भी कर्तव्य कर्मों को पूरा करते हुए प्राण त्याग दिये। प्राण त्यागने से पहले भी वे प्रसन्न व स्वस्थ अवस्था में थे। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर पवित्रता व निष्ठा से आर्यसमाज के कार्यों को आयुपर्यन्त आगे बढ़ाना चाहिए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली व आर्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

—सम्पादक

महर्षि दयानन्द की अतिश्रेष्ठ विचारधारा जिससे मानवता का निर्माण हो

महर्षि दयानन्द ने मानवता निर्माण के विषय में पूना में प्रवचन किया था कि मानवता का निर्माण कैसे हो सकता है ? अभिमान का नाश, आत्मा में आर्द्रता, गुण ग्रहण में पुरुषार्थ, अत्यन्त प्रीति का होना। ये सभी गुण मानवता निर्माण के हैं। अभिमान मानव को सद्गुणों से विमुख करता है। मनुष्य कितना भी गुणी क्यों न हो, अभिमान के उदय होते ही उसके सब गुण ढक जाते हैं।

अभिमान (दोष) का निवारण—

अभिमान— बड़ा विद्वान् होने का अभिमान, कार, बंगले, कोठी, धन-सम्पत्ति, कारखाने, बड़ा भारी व्यापार, उच्च पद, सन्तति आदि का अभिमान, परन्तु मानव यह हमेशा इस बात से अनभिज्ञ रहता है कि ये स्थायी नहीं अस्थायी हैं। यह तो बहुत थोड़े समय के लिए उसके पास धरोहर मात्र हैं और मनुष्य इनकी रक्षा, सुरक्षा में अपनी सारी जीवन की शक्ति को लगा देता है। यदि इसे यह ज्ञान हो जाये कि ये वस्तुएँ सदैव सुख को देने वाली नहीं हैं, इनमें सुख की मात्रा कम और दुःख की मात्रा अधिक है। यदि मनुष्य अभिमान जो दुःखों को देने वाला है, वास्तव में उससे छुटकारा पाना चाहता है या वास्तव में उसका निवारण चाहता है, तो उसे ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द स्वयं प्रार्थना के महत्त्व को जानते थे, उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों का अपने ग्रन्थों में, प्रवचनों में ब्यान किया है। महर्षि दयानन्द की अतिश्रेष्ठ विचारधारा है। उन्होंने प्रार्थना महत्त्व को आर्यों को बतलाने के लिए 'आर्याभिविनय' पुस्तक लिखी जिसमें सब दुःखों के निवारण का प्रार्थना द्वारा Solution तरीका बतलाया है, महर्षि के विचारों को समझकर ही आर्याभिविनय पुस्तक में महर्षि द्वारा दिये गए मन्त्रों के महत्त्व एवं उनकी सार्थकता, उपयोगिता को समझा जा सकता है।

महर्षि दयानन्द की दृष्टि—

प्रार्थना अर्थात् अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर की सहायता लेना। महर्षि का अपना जीवन कितनी कठिनाइयों से भरा पड़ा था, वे उनका निवारण अपने पूर्ण पुरुषार्थ से करते थे और जहाँ उन्हें कोई उपाय नहीं सूझता था, ईश्वर की प्रार्थना से उनका बल बुद्धि, ज्ञान बढ़ जाता था और वह वेदभाष्य करते समय भी मन्त्रों के अर्थ में प्रार्थना का सहारा लेते थे, जहाँ उन्हें नहीं सूझता था।

प्रार्थना है क्या ?

मनीषियों का कथन है—इष्टदेव के सम्मुख अन्तरात्मा से सहज और स्वतन्त्र रूप से निकले उद्गार ही सच्ची प्रार्थना है न कि रटे हुए वाक्य व श्लोक।

मा कुरु धनजनयौवनगर्वम्।
हरति निमेषात् कालः सर्वम्॥

धन-जन, यौवन का गर्व (अभिमान) मत करो, क्योंकि काल क्षण भर में इनको हर लेता है।

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

अदेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकार समदुःखसुख क्षमी॥

गीता 12/13

सामान्यजनों में सामान्य प्रार्थना में भी मनुष्य इन विशेषताओं की झलक का अनुभव करने लगता है, फिर उस परमपिता परमेश्वर के आगे प्रार्थना में ही मनुष्य इन विशेषताओं की झलक का अनुभव करने लगता है, फिर उस परमपिता परमेश्वर के आगे प्रार्थना और याचना करने पर अन्य किसी के आगे हाथ पसारना नहीं पड़ता, उपासक स्वयं अनुभव करने लगता है कि उसका अभिमान न जाने कहाँ चला गया है। सुख-दुःख को समान समझने लगता है। कर्म की सफलता में उसे कभी अभिमान नहीं होता, वह धन-सम्पत्ति, कोठी, कार, बँगला की सम्पत्ति को एक साधन मात्र समझने लगता है, अभिमान नहीं करता।

महर्षि दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखते हैं—**"जो उत्तम कर्मों का फल और स्थान ये सब ईश्वर की प्रसन्नता के अर्थ समर्पित कर देना अवश्य है।"**

श्रीकृष्ण जी गीता में उपदेश करते हैं—

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

गीता 9/26

हे कौन्तेय! तू जो करता है, खाता है, होम=हवन करता है, दान देता है और तप करता है, वह सब ईश्वर को समर्पित कर दे। अपने आपका कुछ न समझकर सब कुछ ईश्वर का दिया हुआ मानने से अभिमान नाम की कोई वस्तु नहीं बचती। किसी विद्वान् के वचन हैं—"Prayerer achived the grea test pleasure of God." प्रार्थना करने वाला प्रभु की महान् प्रसन्नता का अधिकारी होता है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किं च जगत्या जगत्। यजु० 40/1 जगत् में जो कुछ भी दृष्टिगोचर हो रहा है, वह सब उस परमेश्वर से ही आच्छादित है।

यह जानते हुए भी उससे न मांग कर दूसरों के आगे गिड़गिड़ा रहा है, जो कुछ देने वाले नहीं हैं, क्योंकि उन के पास देने को कुछ है ही नहीं। जरा बुद्धि से विचारें ये मूर्तियाँ किसी को क्या दे सकती हैं ? क्या इनके पास देने को कुछ है ? नहीं, आप लोग इन्हीं को उल्टा दे आते हो, उसे पंडे-पुजारी हजम कर जाते हैं और आपके राशन, धन पर खूब फल-फूल रहे हैं ये पंडे। उससे मांगो जो सबका दाता है, जो सारे ब्रह्माण्ड का एकमात्र स्वामी है, संसार का अधिष्ठाता है।

मानव जीवन सभी के लिए एक विचारणीय विषय है जीवन की चार अपरिहार्य अवस्थाएँ— **जरा, मृत्यु, भय** और **व्याधि**, ये जीवन में चैन की नींद लेने ही नहीं देते, बड़ा ही गम्भीर विचारणीय प्रश्न है ? महाभारत शान्तिपर्व 175-23 में वर्णन है।

मृत्युर्जरा च व्याधिश्च दुःखं चानेककारणम्।
अनुषक्तं यदा देहे किं स्वस्थ इव तिष्ठति॥

मृत्यु, जरा, व्याधि और अनेक कारणों से उत्पन्न दुःख शरीर में उपस्थित हों तब किस प्रकार स्वस्थ होकर रहा जा सकता है ?

जरा— बुढापे में शरीर में क्या परिवर्तन होते हैं ? इस बुढ़ापे में अंग क्षीण हो गये हैं, सिर सफेद हो गया है, मुख में दाँत नहीं रहे, लाठी का चलने में सहारा, परन्तु फिर भी लौकिक आशाएँ बूढ़ी नहीं होती, वे ज्यों की त्यों जवान बनी रहती हैं। वृद्धावस्था का सम्बन्ध शरीर और मन दोनों से है, जब दोनों ही शिथिल होने लगे तभी वृद्धावस्था का आरम्भ माना जाता है। यह मनुष्य की इच्छा पर निर्भर है कि वह कब तक स्वस्थ सुखी जीवन जीना चाहता है। मनुष्य बाल सफेद होने से वृद्ध नहीं कहलाता, शरीर के क्षीण होने पर वृद्ध कहलाता है। जो मन से वृद्ध हो गया वह वृद्ध और जो मन से दृढ़ निश्चय कर लेता है कि मैं अभी भी जवान हूँ तब शरीर भला ही बूढ़ा हो जाये परन्तु उसके मन, मस्तिष्क विचार आत्मा पर कहीं बुढ़ापे का कोई असर/प्रभाव नहीं होता। बुढ़ापा अवश्य आना है, मृत्यु अवश्य आनी है।

इन सब दुःखों से छूटने के लिए महर्षि दयानन्द ने सर्वश्रेष्ठ विचार संसार के लोगों के सामने रखे कि मानवता का निर्माण करो, भवनों का निर्माण भी करो लेकिन मानवता की सीमा में रहते हुए। एक अच्छे मानव में जो गुण होने चाहियें उनका ज्ञान ऋषि, महर्षियों, पवित्र आत्माओं के जीवन की घटनाओं से होगा। जैसे महर्षि दयानन्द ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखते थे और वह कभी किसी शक्ति से भयभीत होकर अपने मानवता के कर्त्तव्यों से विचलित नहीं हुए। लाख प्रलोभनों के आगे कभी अपने सुपथ मार्ग को नहीं छोड़ा। आप भी महर्षि दयानन्द के अतिश्रेष्ठ विचारों को समझें और मानवता का निर्माण करें। मेहनत, पुरुषार्थ से धर्मानुसार जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करें। पुरुषार्थ से कमाया धन ही सुख देने वाला है और मानवता का भी यही प्रतीक है।

निर्वाचन

आर्यसमाज पटेल नगर 15 सैक्टर-II गुड़गाँव का वार्षिक चुनाव दिनांक 19.5.13 रविवार को चौ० धर्मवीर की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से निम्नप्रकार सम्पन्न हुआ। लगातार तीन वर्षों से चली आ रही कार्यकारिणी व मन्त्रिमण्डल को ही अगले वर्ष कार्य करने को नियुक्त किया गया है, जिसमें पदाधिकारी निम्न प्रकार हैं—

प्रधान-श्री पदमचन्द आर्य, उपप्रधान-श्री दिनेश आर्य, महामन्त्री-श्री ईश्वरसिंह दहिया, मन्त्री-श्रीमती निर्मला चौधरी, कोषाध्यक्ष-श्री वेदप्रकाश मनचन्दा।

—पदमचन्द आर्य, प्रधान

स्वास्थ्य चर्चा रसायनाधिकार

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मो० : 9416133594

गतांक से आगे....

सबसे पहले दस भिलावे को काट कर तोल ले फिर उसे आठगुणा जल में मृदु आँच पर पकावे। जब अष्टमास शेष रह जायें तो उतारकर छान लेवें और उसमें दूध मिला लें। पीने से पहले मुख के भीतरी भाग में घृत का लेप कर ले और उस क्वाथ मिलित दूध को पी लें। इसी प्रकार प्रतिदिन एक-एक भिलावा बढ़ाते हुए व फिर घटाते हुए सेवन करते रहें जब तक शरीर सहन कर सके। पूर्ण योग 1000 भिलावे के प्रयोग करने पर होता है। इस योग के प्रयोग के दौरान घृत-मिलित दूध के साथ साठी के चावलों के भात का प्रयोग करना चाहिए। सम्पूर्ण प्रयोग काल में जितना दिन लगता है उसके द्विगुण दिनों तक दूध से ही भोजन करना चाहिए।

यदि उपरोक्त विधि व मात्रा का पूर्णरूप से प्रयोग ना कर सकें तो भी अल्प मात्रा में 40 दिनों तक भिलावे का प्रयोग किया जाये तो आज के अनुसार अधिकांश लोगों में असहिष्णुता (Allergy), चाहे किसी भी प्रकार की हो और वात व्याधि जैसे घुटनों का दर्द, कमर व जोड़ों का दर्द और बार-बार जुकाम होना, सर्दी अधिक लगना, शरीर असक्त हो जाना, ऐसी व्याधियों का केवल 40 दिन प्रयोग करने से निर्मूलीकरण हो जाता है।

भल्लातक के प्रयोग की विधि

वैसे तो ऋषियों ने भल्लातक के दस प्रयोगों का वर्णन किया है परन्तु इसमें तीन भल्लातक योग विशेष महत्त्व रखते हैं। मैंने तो यह अनुभव किया है कि भल्लातक क्षीर एक सरल योग है जिसे विधि अनुसार सेवन करना चाहिए। वैसे तो प्राचीन ऋषियों ने 1000 भिलावे का सेवन करने को ही पूर्ण योग माना है। परन्तु वर्तमान समय के मनुष्य इतनी तीव्र उष्णता को सहन नहीं कर पाते हैं। इसलिए इतनी मात्रा में सेवन हानिकारक हो सकता है। चरक का आदेश यह है कि 30 भिलावे से अधिक भिलावा एक मात्रा में भी न लिया जाये। 10 से प्रारम्भ कर जितने भिलावों की उष्णता सहन हो सके उतने भिलावों का प्रयोग करें। प्रयोग करते हुए एक भिलावे से शुरू कर प्रतिदिन एक-एक भिलावे की संख्या बढ़ाते हुए 10 तक बढ़ाना चाहिये। फिर प्रतिदिन एक-एक संख्या घटाते हुए 1 पर आ जाएं। इसी प्रकार 1 से 10 तक व फिर 10 से 1 संख्या तक, बार-बार इस प्रयोग को दोहरायें, जब तक कि कुल 1000 भिलावों का प्रयोग पूर्ण हो जाए। भल्लातक क्षीर के लिए भिलावे के फलपूर्ण रूप सें पके हुए हों, रोग रहित हों, उसमें कीड़े ना लगे हों, पूर्ण रूप से रस, प्रमाण, वीर्य वर्तमान हो, जो पके हुए जामुन के समान काले वर्ण के हों। ऐसे भिलावे के फल को ज्येष्ठ मास या आषाढ़ मास में लेकर जौ या उड़द के ढेर में रख दें। फिर चार मास बाद अगहन या पूस में उसे निकालकर शीत, स्निग्ध और मधुर रस से शरीर का संस्कार कर प्रयोग आरम्भ करना चाहिए।

श्वेतातिसार या संग्रहणी

(Sprue, Diarrhoea alba)

यह एक विशेष प्रकार का रोग है जिसमें आन्त्र कला अति क्षीण और रक्त विहीन हो जाती हैं, पचने के बाद आहार रस को ग्रहण कर रक्त में मिलाने वाले अंकुर क्षीण होकर लुप्तप्राय हो जाते हैं। आहार रस लीन नहीं होता। अतिसार लग जाते हैं, मुखपाक, क्षीणता और दुर्बलता हो जाती है। इस रोग का कारण संभवत: संक्रमण है। एक विशेष प्रकार के कीटाणुओं, जिसे मोनिलिया साइलोसिस कहते हैं, से यह रोग होता है। यह रोग महामारी के रूप में भी फैल जाता है।

इस रोग में आन्त्र की दीवार अति क्षीण और रक्तविहीन हो जाती है। इसमें भोजन को लीन करने वाले श्लेष्मक कला तथा ग्राहकाङ्कर क्षीण हो जाते हैं। शनैः-शनैः ये कला व अंकुर नष्ट हो जाते हैं और इनके स्थान पर सौत्रिक तन्तु बन जाते हैं। श्लेष्मिक कला पहले शोथयुक्त होती है, फिर इसमें व्रण बनने लगते हैं। विशेषकर क्षुद्रान्त्र के निचले भाग में। इस रोग में विशेषकर यकृत् और क्लोम अधिक प्रभावित होते हैं या क्षीण हो जाते हैं। क्लोम शोथयुक्त, वसामय और क्षीण होता जाता है तथा यकृत् और प्लीहा संकुचित होने लगते हैं। जिह्वा की श्लैष्मिक कला फूल जाती है और उसमें व्रण बन जाते हैं। आमाशयिक कला के क्षीण हो जाने पर आमाशयिकरस कम बनता है।

वसा का पक्कीकरण क्लोम के रुग्ण होने से सम्यक्तया नहीं हो पाता और ग्राहकांकुरों के क्षीण हो जाने से आहार पक्कीकरण के अनन्तर भी लीन नहीं होने पाता। अत: रोगी दिनोंदिन क्षीण और रक्तहीन होता जाता है।

रोग शनैः-शनैः गुप्त रोग से आरम्भ होता है। पहिले दो-तीन महीनों में प्रात: ही दो-तीन साधारण दस्तों के अतिरिक्त और कोई विशेष लक्षण नहीं होता। केवल अजीर्ण, अम्लोद्गार और उदरध्मान-सा प्रतीत होता है। कुछ काल पश्चात् प्रात:काल के दस्तों में इस रोग की विशेषता प्रकट होने लगती है अर्थात् उनका वर्ण श्वेत व हरित होने लगता है। मल में अपक्व भोजन द्रव्य और बहुत-सी वसा होती है तथा मल फूला हुआ और झागदार होता है।

अतिसार के साथ-साथ या कुछ काल अतिसार रहने के अनन्तर जिह्वा पर इस रोग के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगते हैं। जिह्वा का किनारा और अग्र भाग लाल हो जाता है, उस पर छोटे-छोटे शोथयुक्त स्थान और छाले बनने लगते हैं। छालों के फटने से व्रण बन जाते हैं। इसी प्रकार तालु, कण्ठ और कपोल के अन्त:स्थ भाग में भी छाले और व्रण बन जाते हैं, शनैः-शनैः जिह्वा की श्लैष्मिककला क्षीण हो जाती हैं, स्वादाङ्कर सङ्कुचित होकर नष्ट हो जाते हैं और जिह्वा शुष्क, रक्ताभ व श्लक्षण प्रतीत होती है। ये लक्षण कुछ काल के लिए बीच-बीच में मन्द भी पड़ जाते हैं और रोगी को शान्ति-सी प्रतीत होने लगती है। इस अल्पकालिक शान्ति के अनन्तर लक्षण पुन: पूर्वापेक्षा तीव्र होने लगते हैं। इसी प्रकार रोग बढ़ता जाता है और रोगी दिन प्रतिदिन क्षीण दुर्बल और रक्तहीन होता जाता है। इसमें दुष्ट विलोहितता व रक्त में परिवर्तन हो जाते हैं। रोगी शनैः-शनैः क्षीण होकर मृतयु को प्राप्त हो जाता है या क्षीणावस्था में कोई अन्य व्याधि उत्पन्न होकर रोगी का प्राण हर लेती है। इस रोग में ज्वर नहीं होता, यदि ज्वर हो तो इसे किसी अन्य रोग का उपद्रव समझना चाहिये।

यह चिरस्थायी जीर्ण व्याधि है, न्यूनातिन्यून दो वर्ष रोगी जीता है, अधिक कई वर्ष तक जा सकती है। चिकित्सा से रोग शान्त भी हो जाता है।

तीव्रावस्था में लक्षण स्पष्ट होते हैं अत: रोग मीमांसा में कोई कष्ट नहीं होता। प्रात:काल श्वेत, फेनिल वसामय दस्त आते हैं। मुँह में छाले और व्रण हो जाते हैं। मल झागदार और श्वेतवर्ण का होता है। रोगी ऐसा प्रतीत करता है कि जितना वह भोजन करता है मल उससे मात्रा में बहुत अधिक होता है तथा दिनोंदिन क्षीणता का बढ़ते जाना रोग को स्पष्ट कर देता है। यकृत् परिमाण से कम होता है। रक्त परीक्षा से दुष्ट विलोहितता के लक्षण प्रतीत होते हैं अर्थात् रक्ताणु बहुत घट जाते हैं श्वेताणुओं की संख्या भी कम हो जाती है। मल में कीटाणु निकलते रहते हैं।

चालीस वर्ष से कम आयु वाले रोगी में जो आहार को नियम में रख सकें तो बहुत अच्छा होता है और रोगी बच जाता है। बड़ी आयु वाले विशेषकर 50 वर्ष से ऊपर वाले तथा जो आहार को नियमित न रख सकें उनमें रोग बढ़ता जाता है और रोगी शनैः-शनैः क्षीण होकर मर जाता है।

इस बीमारी की चिकित्सा जटिल और श्रमसाध्य है और बहुत अनुभवी व आयुर्वेद का मर्मज्ञ होना चाहिए तथा रोगी भी पूर्ण रूप से आयुर्वेदाचार्य (चिकित्सक) को समर्पित हो व लम्बे समय तक चिकित्सा लेने में धैर्यवान हो, क्योंकि दीर्घकाल तक चिकित्सा होने पर ही रोग समाप्त हो सकता है। चिकित्सा के बारे में विस्तार पूर्वक अगले लेख में लिखेंगे। क्रमश:

वैदिक विवाह सम्पन्न

मण्डी डबवाली-स्थानीय आर्यसमाज के प्रधान श्री सन्तोष कुमार दुआ के सुपुत्र आयुष्मान् विपल तथा सौभाग्यवती चुनेश सुपुत्री श्री मदन मोहन भल्ला राजपुरा (पंजाब) निवासी का शुभ विवाह पूर्ण वैदिक रीतानुसार राजपुरा में सम्पन्न हुआ। विवाह संस्कार आर्यसमाज सैक्टर-16 चंडीगढ़ के पुरोहित पंडित दाऊदयाल शर्मा के पौरोहित्य में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। संस्कृत में प्रकाशित आमन्त्रण पत्र की सबने सराहना की। वैशाख कृष्ण चतुर्थी को सम्पन्न इस संस्कार के अवसर पर तथा आमन्त्रण पत्रिका के साथ '**वैदिक विवाह एक संक्षिप्त परिचय**' नामक एक लघु पुस्तिका भी वितरित की गई। इस पुस्तिका में विवाह सम्बन्धित विभिन्न विधियों की बड़े ही सुन्दर ढंग से व्याख्या की गई है। यह पुस्तिका हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रकाशित की गई। इस पुस्तिका के माध्यम से फेरे तथा सप्तपदी की बड़ी ही सुन्दर व्याख्या दी गई है। जिसे पढ़कर सब आनन्द से विभोर हो उठे। यह पुस्तक चिरकाल तक प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

—**डॉ० अशोक आर्य,** 116-मित्र विहार, मण्डी डबवाली मो० 09354845426

आर्य-संसार

विदेशियों ने सीखा यज्ञ व योग

2 जून 2013 को योगाश्रम भाऊ आर्यपुर, रोहतक में फ्रांस और अमेरिका के प्रबुद्ध विद्वानों ने योग साधना तथा यज्ञ सीखा। आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में 'वेदों में विज्ञान' के वैज्ञानिक व्याख्यान से ये बहुत प्रभावित हैं। आचार्य जी ने प्रभु को वेदानुसार 'यद् अनस्था अस्थवन्तं बिभर्ति' यानि प्रभु पंखे को चलाने वाली बिजली के सदृश बताया जो उन्हें अब तक श्रीराम, श्रीकृष्ण व ईसा जैसा समझा था। बाह्य पंखे के चलाने में अदृश्य शक्ति बिजली उत्कृष्ट है। इस दल में एक वैज्ञानिक भी था जो वेदों की शिक्षा का कायल हो गया। आश्रम में बहुत श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियाँ भी प्रदान करके खुश हो रहे थे। ये लोग लगभग वेद शिक्षा से सहमत हैं। योग की शिक्षा-दीक्षा से आचार-विचार में भी शाकाहार ग्रहण करने का प्रयास करते हैं।

—**संजय आर्य, योगाश्रम भाऊ आर्यपुर, रोहतक**

पुण्यतिथि पर यज्ञ

श्री मा० हेतराम जी प्रधान आर्यसमाज मानपुर जिला पलवल की पुण्यतिथि दिनांक 24.5.2013 को हवन-यज्ञ के द्वारा मनाई गई जिसमें सभा भजनोपदेशक श्री चतरसिंह जी व जयसिंह, श्रीराम मनोहरसिंह, डॉ० मानसिंह आदि सम्मिलित हुए। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को 250/- रु० का दान दिया गया।

—**श्रीराम आर्य, आर्यसमाज मानपुर जिला पलवल**

अध्यापकों की आवश्यकता

श्री गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर में निम्नलिखित अध्यापकों की आवश्यकता है—

(1) वेदाचार्य/वेदकथा एवं संस्कृत एम.ए., (2) साहित्याचार्य/एम.ए. संस्कृत, (3) व्याकरणाचार्य/एम.ए. संस्कृत, (4) दर्शनाचार्य/एम.ए. संस्कृत, (5) कम्प्यूटर टीचर।

नोट—

- आचार्य परीक्षा पास अध्यापकों को वरीयता प्रदान की जायेगी।
- सेवानिवृत्त संस्कृत विद्वान्/विदुषियाँ भी इस पद के लिए आवेदन भेज सकते/सकती हैं।
- वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा।
- आवेदन-पत्र शीघ्रातिशीघ्र भेजे जायें और आवेदन पत्र पर अपना मोबाइल नं० अवश्य दें। —**भूषणलाल शर्मा, प्राचार्य**

निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं बृहद्यज्ञ

सोमवार 24 जून 2013 से रविवार 30 जून 2013 तक

शिविराध्यक्ष और यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य राजहंस मैत्रेय, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

जीवन रूपान्तरण के लिए स्वर्णिम अवसर

आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण—योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स आर्य, बहादुरगढ़, प्रवक्ता—डॉ० मुमुक्षु आर्य, नोएडा, आर्य तपस्वी सुखदेव जी, दिल्ली, आचार्य खुशीराम जी, दिल्ली, योगाचार्य रामजीवन जी, रंगपुरी, स्वामी रामानन्द जी सरस्वती, आचार्य रवि शास्त्री।

भजनोपदेशक—पं० रमेशचन्द्र जी कौशिक झज्जर, श्रीमती प्रीति आर्या स्नातिका गुरुकुल चोटीपुरा, योगसाधिका—रामदुलारी बंसल और आश्रम के ब्रह्मचारी।

निवेदक—स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी
मुख्य अधिष्ठाता आश्रम, 9416054195
आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत), जिला झज्जर

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

हिन्दुओं के पतन के कारण अन्धी श्रद्धा

इन हिन्दुओं को कौन समझायेगा जो अपने तैतीस कोटि के देवताओं को छोड़कर मुसलमानों की कबरों पर जाकर सिर पटकते हैं। बृहस्पतिवार के दिन देखो अनेक स्थानों पर पीर-फकीरों की कबरें बनी हुई हैं वहाँ हिन्दू भाई-बहिनों की लाइन लगी हुई है। कबरों पर दीया जलाकर कुछ बताशे चढ़ाकर अपनी मुराद पूरी करने के लिए पीर-फकीर से दुआ कर रहा है। यह तो यह मोटा अन्धविश्वास है और भी अनेक जालों में फंसा हुआ है। तान्त्रिक अपना चमत्कार दिखाकर इनका धन मान मर्यादा लूट लेते हैं। ये भोले भाई बाजार में सौदा बड़ी चतुराई से खरीदता है परन्तु धर्म कर्म की भेड़चाल में अन्धा हो जाता है। वहाँ अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं करता। ईश्वर इनका कैसे कल्याण करेगा।

—**देवराज आर्यमित्र, WZ-428, हरीनगर, नई दिल्ली-64**

कैसे हों हमारे यजमान और ऋत्विज्.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

संस्कार-विधि में लिखते हैं कि **"जो दुष्टाचारी अजितेन्द्रिय पुरुष है उसके वेद, त्याग, यज्ञ, नियम और तप तथा अन्य अच्छे काम कभी सिद्धि को प्राप्त नहीं होते।"** इसलिये **'आचारः परमो धर्मः'** श्रेष्ठ एवं पवित्र आचरण को परमधर्म समझना चाहिये।

यज्ञ आदि श्रेष्ठ कार्यों को सम्पन्न करने और कराने वाले यजमान और ऋत्विज् आदि महानुभाव जब पवित्र मन, समान वैदिक विचार, छल-कपटादि कुटिलता के व्यवहार से रहित होकर जब इन लोकहित कार्यों को पूर्ण करते हैं तभी धर्मात्मा विद्वान् होकर सुशिक्षा एवं विद्वानों के उपदेश से आप सब सुखों को प्राप्त होकर औरों को भी आनन्दित करें।

अन्त में ऋग्वेद का निम्न मन्त्र इसी भाव को पूर्ण कर कह रहा है कि—

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः॥

ऋ० 1/14/90

शब्दार्थ—(देवै) दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव वाले विद्वानों से (सजोषाः) समान प्रीति करने वाला (वरुणः) श्रेष्ठ गुणों में वर्तने (मित्रः) सबका उपकारी और (अर्यमा) न्याय करने वाला (विद्वान्) धर्मात्मा, सज्जन पुरुष (ऋजुनीति) सीधी नीति से (नः) हम लोगों को कर्म विद्या मार्ग (नयतु) प्राप्त करायें। हम सब मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों से सत्य विद्या पाकर उसे औरों को भी प्राप्त करायें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

आर्यसमाज का धुरन्धर कार्यकर्त्ता चला गया

12 मई 2013 ईश्वर, वेद व ऋषिद्रोही रामपालदास के खिलाफ आर्यसमाज के सत्याग्रह में 1 आर्या वीरांगना व 2 आर्यवीरों ने बलिदान दे दिया। तीनों के बलिदान को मैं अपनी श्रद्धा व सम्मान समर्पित करता हूँ। इन तीनों में से शहीद संदीप आर्य के न केवल मैं सन्निकट रहा अपितु आर्यसमाज का कार्य करते हुए उसके साथ चला, साथ ही वाणी का प्रयोग प्रचार के लिए किया, एक मन व हृदय से आर्यसमाज व संगठन के बारे में चिन्तन-मनन किया अत: उस उत्साहित, उल्लासित धर्मवीर युवक के बारे में यहाँ कुछ लिखना चाहूँगा।

लगभग चौदह वर्ष पहले जिस समय शहीद संदीप 13-14 वर्ष का था व मेरी आयु 26 वर्ष की थी उस समय ग्राम शाहपुर (पानीपत) के सरकारी विद्यालय में शाम के समय व्यायाम करते हुए मेरा उससे परिचय हुआ। उस समय वह दुबले-पतले शरीर का बालक था। लंगोट बांधकर व्यायाम करता था तथा मुस्कुराता व खिलखिलाता रहता था, उसके चेहरे की हंसी का सीधा सम्पर्क उसके हृदय व मस्तिष्क से रहता था। उसका बड़ा भाई सुरजीत अत्यन्त व्यायामशील युवक व मेरा मित्र था। कालान्तर में मैं गुरुकुल सिंहपुरा में सेवा देने लगा तथा पिछले जीवन की यादों से भी संपर्क टूट गया। 2006 में गुरुकुल सिंहपुरा छोड़कर एक किराये की इमारत में 'देव दयानन्द' के नाम से गुरुकुल चलाने लगा। इसी दौरान सत्र के आरम्भ में ही शहीद संदीप के भाई सुरजीत का फोन आया कि संदीप को अखाड़े में सोनीपत छोड़ रखा था वहाँ विवाद हो गया, अब गाँव में रहता है लेकिन यहाँ भी वातावरण ठीक नहीं है अत: आप इसे अपने पास रख लो, कोई काम लगा दो, चाहे पैसा एक न देना। मैंने कहा, मेरे पास ले आओ। जब मैं उसे सुखपुरा चौक रोहतक से लेने गया तो लगभग 6 वर्ष बाद उससे मिल रहा था। मैंने देखा दुबला बालक अब 70-75 किलो वजन व 5'-10" कद का युवक बन चुका है। मुझे देखते ही वही मासूम, निश्छल, स्वाभाविक मुस्कान उसके चेहरे पर आ गई। मैं

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

उसे लेकर गुरुकुल पहुँचा। मैंने उसको बालकों को कुश्ती, व्यायाम कराने का कार्य सौंपा। अनेक ऐसे होते हैं जिन्हें माहौल में ढलने के लिए वर्षों लग जाते हैं, अनेक ढल भी नहीं पाते। लेकिन संदीप के पूर्वजन्म के संस्कार ही समझो कि अगले दिन ही उसे ऐसे मजबूत रूप में मैंने पाया जैसा मजबूत वह तब था जिस दिन वह हमें छोड़कर चला गया।

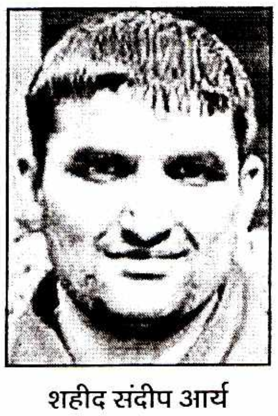
शहीद संदीप आर्य

जब मैंने अगले दिन उसे बालकों को पी.टी. व कुश्ती का प्रशिक्षण देते हुए देखा, उसी दिन मुझे अमिट निश्चय हो गया कि यह अति प्रतिभावान् युवक संग दोष के कारण भटक गया वरन् यह पहलवान भी बहुत प्रसिद्ध बनना था। सोनीपत में श्री राममेहर जी कुण्डु के पास संदीप ने कुश्ती के दाँव-पेंच सीखे थे। जब मैंने पहले ही दिन उसको बालकों को प्रशिक्षण देते देखा तो भावविभोर होकर 500/- उसे दिए, जिस घटना का वर्णन वह अब भी बार-बार मुझसे करता था। यहाँ उसे आर्यसमाज में तपा-तपाया साथी जितेन्द्र मिला, बात-बात में ही उसके हृदय में आर्यसमाज में संस्कार दृढ़ हो गये। उसका जीवन विशेष अनुशासित हो गया, इस कारण उसे अनुशासनहीनता तनिक भी बर्दाश्त नहीं थी। विद्यार्थियों को प्रात: चार बजे उठाना, व्यायाम, स्नान, सन्ध्या, हवन, स्वाध्याय करना व करवाना यही उसके जीवन के अंग बन गए। कुछ ही महीने में उसका वजन लगभग 85 किलो हो गया व उसमें विशेष प्रौढ़ता दिखाई देने लगी। इसी दौरान आचार्य बलदेव जैसे तपस्वी का सान्निध्य उसे मिला। हमारे साथ मिलकर वह बार-बार आचार्य बलदेव के पवित्र, तपमय जीवन की चर्चा करता था व उनके पुनीत उद्देश्य की पूर्ति का साधन बनने का संकल्प लेता था व सुनता था। आर्थिक रूप से वे बड़े अभाव के दिन थे। लेकिन ऐसा साहसी, पवित्र, संकल्पित मित्र पाकर हमारे लिए वे दिन यादगार बन गए। जी भरकर उसके साथ तप किया।

2007 में दिवंगत श्री राममेहर एडवोकेट के कहने से मैं दोबारा सिंहपुरा गुरुकुल चला गया। वहाँ संदीप को संरक्षक नियुक्त करवा दिया। वहाँ उसने रस्साकसी की ऐसी टीम तैयार की जिसका वर्षों तक बोलबाला रहा। कुश्ती के विशेष ब्रह्मचारी तैयार किए। मैं पहले भी लिख चुका न तो वह रत्ती भर भी अनुशासनहीनता करता था और न ही उसे अनुशासन-हीनता बर्दाश्त थी। व्यायाम, स्वाध्याय, सन्ध्या, भोजन के समय भी बालकों की तनिक भी चंचलता उसे बर्दाश्त नहीं थी। संस्थाओं में ऐसा व्यक्ति प्राय: कुछ लोगों की आँख की किरकिरी बन जाया करता है। संदीप के साथ भी ऐसा ही हुआ।

एक वर्ष गुरुकुल में रहकर उसे गुरुकुल छोड़ना पड़ा, लेकिन तब तक वह आर्यसमाज के रंग में पूरा रंग चुका था। अनेक धरने, प्रदर्शनों में कार्यकर्त्ता रूप में मुख्य भूमिका निभाने के साथ-साथ उतार-चढ़ाव, अच्छा-बुरा, संघर्ष देख चुका था। वह उन लोगों में से नहीं था जो ऐसा देखने के बाद कहते हैं कि ठोकर लगी और हम गिर गए, वह उन लोगों में से था जो ठोकर लगने के बाद और मजबूती से खड़े हो जाते हैं।

क्रमश:

श्रद्धाञ्जलि समारोह का आयोजन

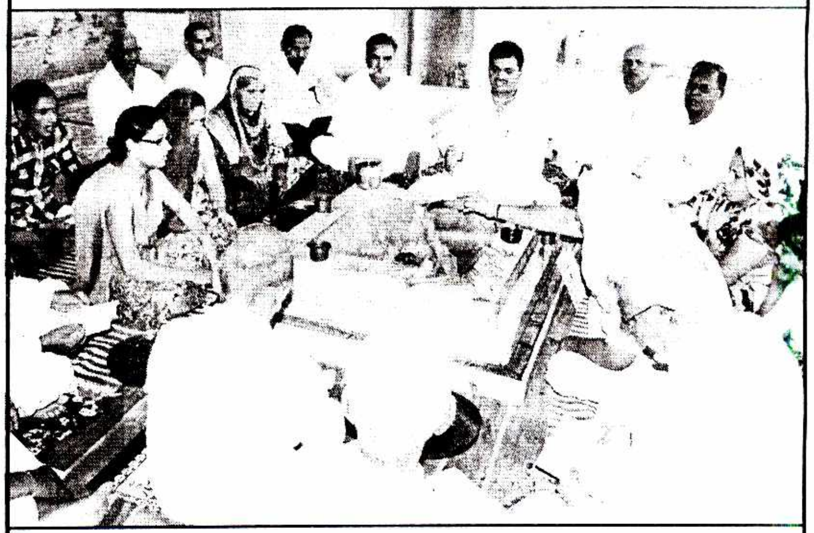

आर्यसमाज मन्दिर, सिरसा में हवन करके करौंथा में शहीद हुए उदयवीर शास्त्री, प्रोमिला एवं संदीप को श्रद्धांजलि दी गई। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य परमजीत शास्त्री थे। सुधाकर शर्मा सपत्नीक यजमान थे।

इस अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर के संरक्षक एवं उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक चौ० जगदीश सींवर शेखूपुरिया ने कहा कि उदयवीर शास्त्री, बहिन प्रोमिला व संदीप की शहादत आर्यसमाज के लिए पाखण्ड के अड्डे को जड़ से मिटाने के लिए मील का पत्थर साबित होगी। जगदीश सींवर जी ने कहा कि पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज, आचार्य श्री विजयपाल जी की अगुवाई में जो इतना बड़ा आन्दोलन हुआ है व इसमें भाग लेने वालों का नाम आर्यसमाज के इतिहास में अमर हो गया है।

इस अवसर पर आचार्य परमजीत शास्त्री, जगदीश सींवर शेखूपुरिया, प्रधान श्री अशोक वर्मा, इन्द्रपाल आर्य, रामदेव शास्त्री, बृजलाल पटवारी भादड़ा, रामप्रताप सरपंच भादड़ा, राजेन्द्र बैनीवाल, विजयपाल सैनी, मास्टर नफेसिंह, चन्नासिंह चामल, ओमप्रकाश आर्य, राजकुमार आर्य, सुरेन्द्र आर्य, वेदप्रकाश सरदाना, संजीव, भूपसिंह गहलौत, कुलदीप आर्य, बिमला रानी, लेखा रानी, तजेन्द्रपाल आर्य, बाला आर्या, हेमन्त आर्य, कमल, चन्द्रमुनि, अभिषेक आर्य, अभिनव आर्य, निखिल, विनय, प्रवीण आर्य, कुनाल शर्मा, राजेश तरकांवाली, रमेश आदि अनेक आर्यजन उपस्थित थे।

—जगदीश सींवर, आर्यसमाज मन्दिर, सिरसा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक सत्यवीर शास्त्री ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।